

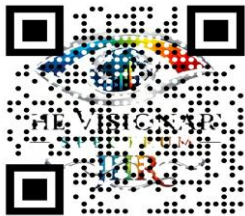
सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' और जयशंकर प्रसाद के काव्य में प्रकृति-चित्रण का तुलनात्मक अध्ययन

डा. मुनीश कुमार पाण्डेय

पी-एच.डी. हिंदी विषय

महात्मा ज्योतिबा फुले रोहिलखंड विश्वविद्यालय बरेली, उत्तर प्रदेश

Email: mkp3099@gmail.com



Received 05 August 2026

Accepted 10 August 2026

Published 19 August 2026

Corresponding Author:

डा. मुनीश कुमार पाण्डेय

Email: mkp3099@gmail.com

DOI: <https://doi.org/10.64880/tvsjir.v1i3.05>

Funding: This research received no specific grant from any funding agency in the public, commercial, or not-for-profit sector.

Copyright: © 2026 The Author(s).



This is an open access article under the [Creative Commons Attribution-Noncommercial 4.0 International License](https://creativecommons.org/licenses/by-nc/4.0/).

OPEN ACCESS

सारांश:

छायावादी हिंदी काव्यधारा के प्रमुख स्तंभों में जयशंकर प्रसाद और सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' का विशिष्ट स्थान है। दोनों कवियों ने हिंदी कविता को भावात्मक गहराई, सौंदर्यबोध, कल्पनाशीलता, मानवीय संवेदना तथा प्रकृति के नवीन और कलात्मक चित्रण से समृद्ध किया। इनके काव्य में प्रकृति केवल बाह्य सौंदर्य की वस्तु नहीं है, बल्कि वह कवि के अंतर्मन, भाव-जगत, दर्शन, जीवन-दृष्टि और मानवीय अनुभूतियों की अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम बनकर सामने आती है। प्रस्तुत शोध-पत्र में जयशंकर प्रसाद और सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' के काव्य में प्रकृति-चित्रण का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। जयशंकर प्रसाद के काव्य में प्रकृति का स्वरूप अत्यंत कोमल, रहस्यपूर्ण, सौंदर्यमय और दार्शनिक है। 'कामायनी', 'आँसू', 'झरना' तथा अन्य काव्य-कृतियों में प्रकृति मानव-मन की भावनाओं के साथ तादात्म्य स्थापित करती दिखाई देती है। 'कामायनी' में प्रकृति कथा के विकास, पात्रों की मानसिक अवस्था और दार्शनिक चिंतन की अभिव्यक्ति का अभिन्न अंग है। जलप्लावन, पर्वत, नदी, वन, प्रभात, संध्या तथा विभिन्न प्राकृतिक दृश्यों के माध्यम से प्रसाद ने प्रकृति के सुंदर एवं विराट दोनों रूपों को प्रस्तुत किया है।

इसके विपरीत निराला के काव्य में प्रकृति अधिक गतिशील, संघर्षशील, जीवंत और मानवीय संवेदना से संपृक्त दिखाई देती है। 'जूही की कली', 'बादल राग', 'राम की शक्ति पूजा', 'तुलसीदास', 'कुकुरमुत्ता' आदि रचनाओं में प्रकृति कभी सौंदर्य की अनुभूति कराती है, कभी संघर्ष और क्रांति का प्रतीक बनती है और कभी सामाजिक यथार्थ को व्यक्त करने का माध्यम। निराला के यहाँ प्रकृति केवल सजावटी तत्व नहीं, बल्कि जीवन-संघर्ष और परिवर्तन की चेतना से जुड़ी हुई है।

अध्ययन से स्पष्ट होता है कि दोनों कवियों की प्रकृति-दृष्टि छायावादी संवेदना से जुड़ी होने के बावजूद उनकी अभिव्यक्ति में पर्याप्त भिन्नता है। प्रसाद की प्रकृति में सौंदर्य, रहस्य, समरसता और दार्शनिकता प्रमुख है, जबकि निराला की प्रकृति में गति, संघर्ष, विद्रोह, मानवीयता और सामाजिक चेतना का स्वर अधिक मुखर है। दोनों कवियों ने प्रकृति को मानव जीवन के साथ जोड़कर हिंदी काव्य को एक व्यापक और नवीन दृष्टि प्रदान की।

मुख्य शब्द: जयशंकर प्रसाद, सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला', भावात्मक गहराई, सौंदर्यबोध, कल्पनाशीलता, मानवीय संवेदना।

1. प्रस्तावना

हिंदी साहित्य के विकासक्रम में प्रकृति का अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान रहा है। आदिकालीन और भक्तिकालीन साहित्य से लेकर आधुनिक हिंदी कविता तक प्रकृति कवियों की संवेदनाओं और कल्पनाओं की सहचरी रही है। किंतु आधुनिक हिंदी कविता में, विशेषतः छायावादी युग में, प्रकृति-चित्रण ने एक नवीन

रूप ग्रहण किया। प्रकृति अब केवल पर्वत, नदी, वन, पुष्प, चंद्रमा, सूर्य और ऋतुओं का बाह्य वर्णन नहीं रही, बल्कि वह कवि के अंतर्मन और मानवीय भावनाओं का प्रतिबिंब बन गई।

छायावाद के प्रमुख कवियों-जयशंकर प्रसाद, सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला', सुमित्रानंदन पंत और महादेवी वर्मा-ने प्रकृति को विभिन्न दृष्टियों से देखा और अनुभव किया। इनमें जयशंकर प्रसाद और निराला की प्रकृति-दृष्टि विशेष रूप से उल्लेखनीय है।

जयशंकर प्रसाद के काव्य में प्रकृति सौंदर्य, रहस्य, प्रेम, दर्शन और मानवीय भावनाओं की अभिव्यक्ति का माध्यम है। कामायनी में प्रकृति कथा का अभिन्न अंग बन जाती है। प्राकृतिक प्रलय से आरंभ होने वाली कथा मानव सभ्यता, मनु, श्रद्धा और इड़ा के माध्यम से मानव जीवन के विभिन्न आयामों का अन्वेषण करती है। कामायनी में प्रकृति के सुंदर तथा विकराल दोनों रूप दिखाई देते हैं। शोधपरक अध्ययनों में भी यह रेखांकित किया गया है कि प्रकृति कामायनी में केवल पृष्ठभूमि नहीं, बल्कि कथानक और दार्शनिक संरचना का महत्वपूर्ण हिस्सा है।

निराला की प्रकृति-दृष्टि दूसरी ओर अधिक गतिशील और संघर्षशील है। उनकी प्रकृति में जीवन की ऊर्जा, परिवर्तन और संघर्ष दिखाई देते हैं। राम की शक्ति पूजा में सूर्यास्त, समुद्र, पर्वत, वायु और अंधकार आदि प्राकृतिक तत्व राम के मानसिक संघर्ष और युद्ध की गंभीरता को प्रभावशाली बनाते हैं। आलोचनात्मक अध्ययनों में भी यह बात सामने आती है कि निराला के यहाँ प्रकृति प्रायः भावात्मक और मानसिक अनुभव का माध्यम बनती है।

अतः दोनों कवियों की प्रकृति-दृष्टि का तुलनात्मक अध्ययन हिंदी काव्य के विकास और छायावादी सौंदर्यबोध को समझने की दृष्टि से अत्यंत उपयोगी है।

2. शोध की समस्या

प्रस्तुत शोध की मूल समस्या यह है “जयशंकर प्रसाद और सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' के काव्य में प्रकृति-चित्रण की समानताओं और भिन्नताओं का स्वरूप क्या है तथा दोनों कवियों की प्रकृति-दृष्टि उनकी व्यापक जीवन-दृष्टि को किस प्रकार अभिव्यक्त करती है?”

इस समस्या के अंतर्गत यह जानने का प्रयास किया गया है कि दोनों कवियों ने प्रकृति को किस प्रकार देखा, अनुभव किया और काव्य में रूपांतरित किया।

3. शोध के उद्देश्य

प्रस्तुत शोध के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं-

- 1- जयशंकर प्रसाद के काव्य में प्रकृति-चित्रण का अध्ययन करना।
- 2- सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' के काव्य में प्रकृति के विविध रूपों का विश्लेषण करना।
- 3- दोनों कवियों की प्रकृति-दृष्टि की समानताओं का अध्ययन करना।
- 4- दोनों कवियों की प्रकृति-दृष्टि की भिन्नताओं को स्पष्ट करना।
- 5- प्रकृति और मानवीय भावनाओं के संबंध का अध्ययन करना।
- 6- प्रकृति के मानवीकरण एवं प्रतीकात्मक प्रयोग का विश्लेषण करना।
- 7- दोनों कवियों के प्रकृति-चित्रण में दार्शनिक और आध्यात्मिक तत्वों का अध्ययन करना।
- 8- निराला के प्रकृति-चित्रण में सामाजिक एवं संघर्षशील चेतना का अध्ययन करना।
- 9- प्रसाद के प्रकृति-चित्रण में सौंदर्य, रहस्य और समरसता की भूमिका स्पष्ट करना।
- 10- दोनों कवियों की प्रकृति-दृष्टि के माध्यम से उनके व्यापक काव्य व्यक्तित्व को समझना।

4. शोध-पद्धति

इस शोध में मुख्यतः वर्णनात्मक, विश्लेषणात्मक तथा तुलनात्मक शोध-पद्धति का प्रयोग किया गया है। दोनों कवियों की प्रमुख काव्य-कृतियों का अध्ययन करते हुए उनमें प्रकृति के स्वरूप, प्रयोजन, प्रतीकात्मकता, मानवीकरण, भावात्मकता तथा दार्शनिकता का विश्लेषण किया गया है।

अध्ययन के लिए प्राथमिक स्रोत के रूप में दोनों कवियों की मूल काव्य-कृतियों तथा द्वितीयक स्रोत के रूप में आलोचनात्मक ग्रंथों, शोध-लेखों और शैक्षणिक सामग्री का उपयोग किया गया है।

5. छायावाद और प्रकृति-चित्रण

हिंदी साहित्य में छायावाद का उदय बीसवीं शताब्दी के आरंभिक दशकों में हुआ। छायावादी कविता ने व्यक्ति की आंतरिक अनुभूति, सौंदर्य-बोध, प्रेम, प्रकृति, रहस्य और आत्मचेतना को विशेष महत्त्व दिया।

छायावादी कवियों ने प्रकृति को निर्जीव वस्तु के रूप में स्वीकार नहीं किया। उनके लिए प्रकृति में चेतना और संवेदना विद्यमान थी। इसी कारण प्रकृति कभी मानव की सहचरी, कभी प्रियतम, कभी माता, कभी प्रेरक शक्ति और कभी मन की भावनाओं का प्रतीक बन जाती है।

जयशंकर प्रसाद और निराला दोनों इसी व्यापक छायावादी परंपरा से जुड़े हैं, किंतु उनकी व्यक्तिगत जीवन-दृष्टि और रचनात्मक व्यक्तित्व के कारण प्रकृति के चित्रण में अलग-अलग स्वर विकसित हुए।

6. जयशंकर प्रसाद के काव्य में प्रकृति-चित्रण

जयशंकर प्रसाद हिंदी साहित्य के महान कवि, नाटककार और चिंतक हैं। उनके काव्य में प्रकृति का अत्यंत व्यापक और कलात्मक चित्रण मिलता है। कामायनी, आँसू, झरना और अन्य काव्य-कृतियों में प्रकृति के विभिन्न रूप दिखाई देते हैं।

6.1 प्रकृति का सौंदर्यमय रूप

प्रसाद प्रकृति के सौंदर्य को अत्यंत कोमल और संगीतात्मक भाषा में व्यक्त करते हैं। उनके यहाँ पर्वत, नदी, वन, फूल, पवन, चंद्रमा, प्रभात और संध्या आदि प्राकृतिक तत्व सौंदर्य की अनुभूति कराते हैं।

प्रकृति उनके लिए केवल दृश्य नहीं, बल्कि सौंदर्यानुभूति का माध्यम है। उनके प्रकृति-चित्रों में रंग, ध्वनि, गति और प्रकाश का सुंदर समन्वय मिलता है।

6.2 प्रकृति और मानवीय भावनाएँ

प्रसाद की प्रकृति मानव के सुख-दुख, आशा-निराशा, प्रेम-विरह और मानसिक संघर्षों से जुड़ जाती है।

प्रकृति पात्रों के मनोभावों को व्यक्त करने में सहायक होती है। जब पात्र आनंदित होते हैं तो प्रकृति भी प्रसन्न दिखाई देती है और जब पात्र दुखी होते हैं तो प्राकृतिक वातावरण में भी उदासी और विषाद का भाव दिखाई देता है।

इस प्रकार प्रकृति और मानव के बीच गहरा भावात्मक तादात्म्य स्थापित होता है।

6.3 'कामायनी' में प्रकृति

कामायनी प्रसाद की सर्वाधिक महत्वपूर्ण काव्य-कृति है। इसमें प्रकृति का अत्यंत व्यापक रूप दिखाई देता है।

काव्य का आरंभ ही जलप्लावन की भयंकर प्राकृतिक घटना से होता है। यह प्रकृति के विकराल स्वरूप का चित्रण है। देव-संस्कृति के विनाश के पीछे प्रकृति के असंतुलन का विचार भी काव्य में महत्वपूर्ण है। आधुनिक आलोचनात्मक दृष्टियों में कामायनी के इस पक्ष को पर्यावरणीय असंतुलन से भी जोड़कर देखा गया है।

कामायनी में प्रकृति के प्रमुख रूप हैं-

- विनाशकारी प्रकृति
- सौंदर्यमयी प्रकृति
- रहस्यमयी प्रकृति
- मानवीकृत प्रकृति

- उद्दीपन रूप में प्रकृति
- प्रतीकात्मक प्रकृति
- दार्शनिक प्रकृति

इस दृष्टि से कामायनी में प्रकृति कथानक का अभिन्न अंग बन जाती है। शैक्षणिक अध्ययनों में भी यह माना गया है कि इसमें प्रकृति आलंबन, उद्दीपन, प्रतीक और मानवीकरण आदि अनेक रूपों में उपस्थित है।

6.4 प्रकृति का रहस्यात्मक स्वरूप

प्रसाद के प्रकृति-चित्रण में रहस्य का विशेष महत्त्व है। प्रकृति उनके लिए ऐसी शक्ति है जिसके बाहरी रूप के पीछे कोई गहरा और अदृश्य सत्य विद्यमान है। चंद्रमा, रात्रि, जल, पर्वत और आकाश जैसे तत्व उनके काव्य में केवल प्राकृतिक पदार्थ नहीं रहते, बल्कि वे जीवन के रहस्य और अस्तित्व संबंधी प्रश्नों को व्यक्त करने लगते हैं।

6.5 प्रकृति और दर्शन

प्रसाद का काव्य केवल सौंदर्यपरक नहीं है। उसमें गहरी दार्शनिक चेतना भी विद्यमान है। प्रकृति के माध्यम से वे मानव जीवन, इच्छा, ज्ञान, कर्म, सुख, दुःख और समरसता जैसे प्रश्नों पर विचार करते हैं।

कामायनी में प्रकृति और मानव सभ्यता का संबंध विशेष रूप से महत्वपूर्ण है। प्रकृति के असंतुलन और मानव के अहंकार के बीच स्थापित संबंध आधुनिक पर्यावरणीय विमर्श की दृष्टि से भी उल्लेखनीय है।

7. निराला के काव्य में प्रकृति-चित्रण

सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' आधुनिक हिंदी कविता के अत्यंत मौलिक और प्रयोगशील कवि हैं। उनकी कविता में प्रकृति का चित्रण छायावादी सौंदर्य से आगे बढ़कर जीवन-संघर्ष, मानवीयता और सामाजिक चेतना से जुड़ जाता है।

उनकी प्रमुख रचनाओं में जूही की कली, बादल राग, राम की शक्ति पूजा, तुलसीदास और कुकुरमुत्ता आदि में प्रकृति के विविध रूप दिखाई देते हैं।

7.1 प्रकृति का कोमल और सौंदर्यमय रूप

जूही की कली जैसी रचनाओं में निराला की प्रकृति अत्यंत कोमल, संवेदनशील और सौंदर्यमयी दिखाई देती है।

फूल, पवन, वन और सुगंध आदि के माध्यम से कवि ने प्रकृति में प्रेम और सौंदर्य की अनुभूति को अभिव्यक्त किया है।

यहाँ प्रकृति केवल दृश्य नहीं, बल्कि भावनात्मक अनुभव बन जाती है।

7.2 प्रकृति का गतिशील रूप

निराला की प्रकृति स्थिर नहीं है। उसमें निरंतर गति और परिवर्तन है। बादल, हवा, नदी, समुद्र और तूफान आदि उनके काव्य में ऊर्जा और गति के प्रतीक बन जाते हैं। उनकी प्रकृति में जीवन के संघर्ष का स्वर सुनाई देता है।

7.3 'राम की शक्ति पूजा' में प्रकृति

राम की शक्ति पूजा में प्रकृति का चित्रण अत्यंत प्रभावशाली है। कविता की शुरुआत ही युद्ध के बाद के गंभीर प्राकृतिक वातावरण से होती है- "रवि हुआ अस्त ज्योति के पत्र पर लिखा अमर"

यहाँ सूर्य का अस्त होना केवल दिन का समाप्त होना नहीं है, बल्कि राम के सामने उपस्थित संकट और निराशा का प्रतीक भी है। कविता में समुद्र, वायु, पर्वत, अंधकार और आकाश आदि प्राकृतिक तत्व राम के आंतरिक संघर्ष को अधिक प्रभावशाली बनाते हैं। आलोचनात्मक अध्ययनों में भी राम की शक्ति पूजा के प्राकृतिक वातावरण को राम की मानसिक उथल-पुथल और संघर्ष से संबंधित माना गया है।

7.4 प्रकृति और संघर्ष

निराला की प्रकृति संघर्ष का प्रतीक बनती है। समुद्र की उताल तरंगों, तीव्र वायु, अंधकार और तूफान आदि जीवन की कठिनाइयों और संघर्षों का रूपक बन जाते हैं। उनकी प्रकृति मनुष्य को परिस्थितियों के सामने झुकने के बजाय संघर्ष करने की प्रेरणा देती है।

7.5 प्रकृति और सामाजिक चेतना

निराला की प्रकृति-दृष्टि का एक महत्वपूर्ण पक्ष उनकी सामाजिक चेतना है। वे प्रकृति को समाज के वंचित और संघर्षशील वर्गों की संवेदना से भी जोड़ते हैं। कुरुरमुत्ता में प्रकृति का सामान्य और उपेक्षित तत्व सामाजिक प्रतीक का रूप ले लेता है। इस प्रकार प्रकृति का प्रयोग सामाजिक विषमता और वर्गीय चेतना को व्यक्त करने के लिए भी किया जाता है।

8. निराला और प्रसाद के प्रकृति-चित्रण की समानताएँ

दोनों कवियों के प्रकृति-चित्रण में अनेक समानताएँ दिखाई देती हैं।

8.1 प्रकृति का मानवीकरण

दोनों कवियों ने प्रकृति को मानवीय गुण प्रदान किए हैं। प्रकृति उनके यहाँ हँसती, रोती, उदास होती, प्रेरणा देती और भावनाओं को व्यक्त करती है।

8.2 प्रकृति और मानव का संबंध

दोनों कवियों के यहाँ प्रकृति और मानव एक-दूसरे से अलग नहीं हैं। मानव की मानसिक स्थिति प्रकृति में प्रतिबिंबित होती है।

8.3 प्रकृति का भावात्मक रूप

दोनों कवियों ने प्रकृति को केवल बाहरी दृश्य के रूप में प्रस्तुत नहीं किया। उसके माध्यम से प्रेम, विरह, आशा, निराशा, आनंद, पीड़ा और संघर्ष की भावनाओं को व्यक्त किया।

8.4 प्रतीकात्मकता

प्रकृति के विभिन्न तत्व दोनों कवियों के यहाँ प्रतीक बनते हैं।

उदाहरण के लिए-

- अंधकार - निराशा/संकट
- प्रकाश - आशा/ज्ञान
- वसंत - आनंद/नवजीवन
- वर्षा - जीवन और ऊर्जा
- तूफान - संघर्ष
- नदी - जीवन की गति
- पर्वत - स्थिरता/शक्ति

8.5 छायावादी सौंदर्यबोध

दोनों कवियों ने प्रकृति में सौंदर्य और रहस्य की अनुभूति की। उनकी प्रकृति-दृष्टि में कल्पना और भावुकता का महत्वपूर्ण स्थान है।

9. प्रकृति के आलंबन और उद्दीपन रूप

भारतीय काव्यशास्त्र में प्रकृति को आलंबन तथा उद्दीपन दोनों रूपों में देखा जाता है। आलंबन रूप में प्रकृति स्वयं सौंदर्य का विषय होती है। कवि प्राकृतिक दृश्य का स्वतंत्र रूप से चित्रण करता है। उद्दीपन रूप में प्रकृति पात्र अथवा कवि के भावों को तीव्र करने का कार्य करती है।

जयशंकर प्रसाद के काव्य में दोनों रूप दिखाई देते हैं। कामायनी में प्राकृतिक दृश्य पात्रों की मनःस्थितियों को प्रभावित करते हैं।

निराला के यहाँ उद्दीपन रूप विशेष प्रभावशाली है। राम की शक्ति पूजा में अंधकार, सूर्यास्त और समुद्र का वातावरण राम की मानसिक स्थिति और युद्ध की गंभीरता को तीव्र करता है।

10. प्रकृति का मानवीकरण

प्रकृति को मानव-सदृश गुण देना दोनों कवियों की महत्वपूर्ण विशेषता है।

प्रसाद प्रकृति को संवेदनशील सत्ता के रूप में देखते हैं। उनके यहाँ प्रकृति मानव के सुख-दुःख में सहभागी होती है।

निराला के यहाँ भी प्रकृति मानवीय चेतना से संपन्न है, लेकिन उनके मानवीकरण में अधिक गतिशीलता दिखाई देती है। बादल, हवा, समुद्र और पर्वत जैसे तत्व संघर्ष तथा शक्ति के प्रतीक बन जाते हैं।

इस प्रकार प्रसाद का मानवीकरण अधिक सौंदर्यात्मक और दार्शनिक है, जबकि निराला का मानवीकरण अधिक ऊर्जस्वी और संघर्षात्मक दिखाई देता है।

11. प्रकृति और मनोविज्ञान

दोनों कवियों ने प्रकृति को मानव मन के दर्पण के रूप में प्रयोग किया है।

प्रसाद के यहाँ प्रकृति मन की सूक्ष्म अवस्थाओं को अभिव्यक्त करती है। प्रेम, विरह, आशा और निराशा आदि भाव प्राकृतिक दृश्यों से जुड़ जाते हैं।

निराला के यहाँ मनोवैज्ञानिक प्रकृति अधिक संघर्षशील है। राम का संशय, निराशा, आत्मविश्वास और शक्ति-संधान प्राकृतिक वातावरण के माध्यम से अधिक प्रभावशाली बनता है। आधुनिक आलोचनात्मक अध्ययनों में राम की शक्ति पूजा को राम के आत्मसंघर्ष और शक्ति-साधना के मनोवैज्ञानिक रूपांतरण के रूप में भी देखा गया है।

12. प्रकृति और दर्शन

प्रसाद के काव्य में प्रकृति का दार्शनिक पक्ष अत्यंत गहरा है। कामायनी में प्रकृति और मानव सभ्यता का संबंध जीवन-दर्शन से जुड़ जाता है।

निराला के यहाँ भी प्रकृति दार्शनिक अर्थ ग्रहण करती है, किंतु उनका दर्शन अधिकतर संघर्ष और कर्म के माध्यम से अभिव्यक्त होता है।

प्रसाद का प्रश्न है-मानव जीवन में समरसता कैसे स्थापित हो?

निराला का प्रश्न अधिक संघर्षपूर्ण है-विपरीत परिस्थितियों में मनुष्य अपनी शक्ति और आत्मविश्वास कैसे प्राप्त करे?

इस दृष्टि से दोनों कवियों की प्रकृति क्रमशः समरसता और संघर्ष की जीवन-दृष्टि से जुड़ती है।

13. प्रकृति और पर्यावरणीय दृष्टि

आज के संदर्भ में प्रसाद के कामायनी में प्रकृति का अध्ययन पर्यावरणीय दृष्टि से भी किया जा सकता है।

कामायनी में देव-संस्कृति का विनाश और जलप्लावन केवल पौराणिक घटना नहीं माना जा सकता। इसमें मानव के अहंकार, भोगवादी प्रवृत्ति और प्रकृति के असंतुलन के बीच संबंध को भी पढ़ा जा सकता है। आधुनिक पर्यावरणीय आलोचना में कामायनी के इसी पक्ष पर विशेष ध्यान दिया गया है।

निराला के यहाँ पर्यावरणीय चेतना आधुनिक अर्थ में प्रत्यक्ष विषय नहीं है, लेकिन प्रकृति के साथ मनुष्य के भावात्मक संबंध और प्रकृति की शक्ति का चित्रण उनके काव्य में पर्याप्त रूप से मिलता है।

14. भाषा और शैली की दृष्टि से तुलनात्मक अध्ययन

जयशंकर प्रसाद

प्रसाद की भाषा में-

- कोमलता

- संगीतात्मकता
- प्रतीकात्मकता
- लाक्षणिकता
- चित्रात्मकता
- दार्शनिकता

प्रमुख हैं।

उनकी भाषा प्रकृति के सूक्ष्म और रहस्यमय रूप को व्यक्त करने में सक्षम है।

निराला

निराला की भाषा में-

- ओज
- गतिशीलता
- प्रयोगशीलता
- ध्वन्यात्मकता
- मुक्त छंद
- नवीन बिंब
- तीव्र भावाभिव्यक्ति प्रमुख हैं।

निराला प्रकृति को कभी अत्यंत कोमल भाषा में तो कभी अत्यंत शक्तिशाली और उग्र भाषा में प्रस्तुत करते हैं।

15. तुलनात्मक निष्कर्ष

तुलनात्मक अध्ययन से निम्नलिखित निष्कर्ष सामने आते हैं-

1. दोनों कवि प्रकृति को मानव जीवन का अभिन्न अंग मानते हैं।
2. दोनों के काव्य में प्रकृति का मानवीकरण मिलता है।
3. दोनों प्रकृति को भावों की अभिव्यक्ति का माध्यम बनाते हैं।
4. दोनों के यहाँ प्रकृति प्रतीकात्मक अर्थ ग्रहण करती है।
5. प्रसाद की प्रकृति अधिक सौंदर्यमयी, रहस्यमयी और दार्शनिक है।
6. निराला की प्रकृति अधिक गतिशील, संघर्षशील और ऊर्जस्वी है।
7. कामायनी में प्रकृति कथानक और दर्शन से गहरे स्तर पर जुड़ी है।
8. राम की शक्ति पूजा में प्रकृति राम के संघर्ष और मानसिक द्वंद्व की पृष्ठभूमि बनती है।
9. प्रसाद प्रकृति के माध्यम से समरसता और आनंद की जीवन-दृष्टि प्रस्तुत करते हैं।
10. निराला प्रकृति के माध्यम से संघर्ष, शक्ति और परिवर्तन की चेतना को व्यक्त करते हैं।
11. प्रसाद के प्रकृति-चित्रण में रहस्य और सौंदर्य का समन्वय अधिक है।
12. निराला के प्रकृति-चित्रण में मानवीय संघर्ष और सामाजिक चेतना अधिक मुखर है।

16. निष्कर्ष

जयशंकर प्रसाद और सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' दोनों हिंदी साहित्य के ऐसे महान कवि हैं जिन्होंने प्रकृति को नवीन काव्य-दृष्टि प्रदान की। दोनों की प्रकृति-दृष्टि छायावादी चेतना से विकसित होती है, किंतु दोनों की व्यक्तिगत संवेदना और जीवन-दृष्टि के कारण उनके प्रकृति-चित्रण के स्वरूप में अंतर दिखाई देता है।

प्रसाद के लिए प्रकृति सौंदर्य, प्रेम, रहस्य और दर्शन की संवाहक है। उनकी प्रकृति मानव जीवन के साथ समरस होकर उसके गहनतम प्रश्नों को व्यक्त करती है। कामायनी में प्रकृति कभी विनाशकारी शक्ति है, कभी सौंदर्य का स्रोत और कभी मानव जीवन के दार्शनिक चिंतन की भूमि। इसीलिए प्रसाद के प्रकृति-चित्रण में सौंदर्य और दर्शन का अद्भुत समन्वय दिखाई देता है।

निराला की प्रकृति अपेक्षाकृत अधिक सक्रिय और संघर्षशील है। वे प्रकृति को जीवन की गति, शक्ति और परिवर्तन के साथ जोड़ते हैं। राम की शक्ति पूजा में प्रकृति राम के मानसिक संघर्ष को गहराती है, जबकि जूही की कली जैसी रचनाओं में वह कोमल सौंदर्य का रूप ग्रहण करती है। उनकी प्रकृति में मानवतावादी और सामाजिक चेतना भी दिखाई देती है।

इस प्रकार कहा जा सकता है कि प्रसाद की प्रकृति "समरसता, सौंदर्य और रहस्य" की प्रकृति है, जबकि निराला की प्रकृति "गति, संघर्ष, शक्ति और परिवर्तन" की प्रकृति है। दोनों ने प्रकृति को केवल वर्णन का विषय न बनाकर उसे अपने काव्य-दर्शन का अभिन्न अंग बनाया। यही उनके प्रकृति-चित्रण की सबसे बड़ी उपलब्धि है।

17. शोध की उपादेयता

प्रस्तुत अध्ययन आधुनिक हिंदी साहित्य में प्रकृति की बदलती अवधारणा को समझने की दृष्टि से उपयोगी है। इसके माध्यम से यह स्पष्ट होता है कि हिंदी कविता में प्रकृति का विकास केवल बाह्य सौंदर्य-वर्णन से भावात्मक, मनोवैज्ञानिक, दार्शनिक और सामाजिक अभिव्यक्ति तक हुआ।

यह शोध विशेष रूप से-

- हिंदी साहित्य के विद्यार्थियों,
- शोधार्थियों,
- बी.ए./एम.ए. हिंदी के विद्यार्थियों,
- छायावाद के अध्येताओं,
- तुलनात्मक साहित्य के शोधकर्ताओं के लिए उपयोगी हो सकता है।

19. संदर्भ-सूची

- 01- प्रसाद, जयशंकर। कामायनी। नई दिल्ली- राजकमल प्रकाशन।
- 02- प्रसाद, जयशंकर। आँसू। नई दिल्ली- राजकमल प्रकाशन।
- 03- प्रसाद, जयशंकर। झरना। नई दिल्ली- राजकमल प्रकाशन।
- 04- प्रसाद, जयशंकर। लहर। नई दिल्ली- राजकमल प्रकाशन।
- 05- वर्मा, रामचंद्र। हिंदी साहित्य कोश। वाराणसी- ज्ञानमंडल।
- 06- शुक्ल, रामचंद्र। हिंदी साहित्य का इतिहास। वाराणसी- नागरी प्रचारिणी सभा।
- 07- द्विवेदी, हजारीप्रसाद। हिंदी साहित्य की भूमिका। नई दिल्ली- राजकमल प्रकाशन।
- 08- नामवर सिंह। छायावाद। नई दिल्ली- राजकमल प्रकाशन।

09- नंददुलारे वाजपेयी। हिंदी साहित्य- बीसवीं शताब्दी। इलाहाबाद- लोकभारती प्रकाशन।

10- बच्चन सिंह। आधुनिक हिंदी साहित्य का इतिहास। नई दिल्ली- लोकभारती प्रकाशन।

संक्षिप्त शोध-निष्पत्ति

अंततः यह कहा जा सकता है कि जयशंकर प्रसाद और निराला दोनों ने हिंदी काव्य में प्रकृति को नई अर्थवत्ता प्रदान की। प्रसाद ने प्रकृति में सौंदर्य, रहस्य, प्रेम और दार्शनिक समरसता को देखा, जबकि निराला ने उसमें शक्ति, गति, संघर्ष, विद्रोह और परिवर्तन की चेतना को पहचाना। दोनों की प्रकृति-दृष्टि मिलकर आधुनिक हिंदी कविता में प्रकृति के बहुआयामी स्वरूप को सामने लाती है। यही कारण है कि इन दोनों कवियों का प्रकृति-चित्रण आज भी हिंदी साहित्य के अध्ययन में अत्यंत प्रासंगिक बना हुआ है।

Disclaimer/Publisher's Note: The views, findings, and opinions expressed in this publication are solely those of the author(s). The publisher and editorial team are not responsible for any errors, claims, or consequences arising from the use of the published content.